ऐतिहासिक

डा पी एल शर्मा

अलग साम्राज्य रहा सकल कोसल का

सोमवंशीय शासकों ने कोसल क्षेत्र में दो सौ वर्षों तक शासन किया था। पाण्डुवंशीय शासकों ने कलिंग की ओर ध्यान भी दिया था और महाशिव तीवरराज ने गौरवपूर्ण त्रिकालिंगादिधिपति उपाधि धारण की थी। इसके साथ ही सकल कोसलाधिपति की उपाधि को उन्होंने और उनके पुत्र नंदराज ने बड़े ही जतन से संजोए रखा। सकल कोसल का बड़ा महत्वपूर्ण अर्थ है। यह वह क्षेत्र होता है जो वर्तमान छत्तीसगढ़ कोसल राज का वह भाग जो ओड़िशा में चला गया है। जैसे कालाहांडी, संबलपुर, सुंदरगढ़, फुलबानी और बलागीर आदि जिले पूर्व में यह सकल कोसल कहलाता था। इस पर शरभपुरीय-पांडु वंशीय और बाद में सोमवंशीय शासक हमेशा काबिज रहे। सोमवंशीय शासकों ने जो पांडुवंशियों के कनिष्ठ शासक थे, उसने कलिंग की ओर ध्यान मोड़ा। इस योजना के तहत उन्होंने पूर्ण विकसित सुविधाओं से सुसज्जित और लगभग सकल कोसल के मध्य स्थित श्रीपुर को छोड़ पूर्वी कोसल में उपयुक्त स्थान के तलाश में श्रीपुर के बराबरी का स्थान ढूंढते रहे, जहां से ओड, कलिंग, कोगोंद तोशाली यह क्षेत्र निकट पड़े। क्योंकि वे उनके चिन्हित क्षेत्र थे, जो उन्हें त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि सार्थक रूप से धारण करने दें। इस राजधानी नगर की खोज में उन्होंने सुरसीम, आराम, स्वर्णपुर, विनीतपुर और ययाति नगर इत्यादि को अपनाने की योजना की। यह सभी स्थान इन शासकों ने सुरुचिपूर्ण ढंग से विकसित करने का प्रयास भी किया।

लोक साहित्य

डा अनसूया अग्रवाल

छत्तीसगढ़ी बाल साहित्य चुनौतियां एवं संभावनाएं

छत्तीसगढ़ी बाल साहित्य का हम समग्र रूप से अवलोकन - विश्लेषण करें तो समर्थ रचनाकार दो भिन्न भाव भूमियों पर अपने सृजन कर्म को उद्घाटित करते हुए साहित्य सरोवर को समृद्ध कर रहे हैं। एक तो कल्पना पर आधारित बाल साहित्य का प्रणयन, जो बाल मन की अभिरुचियों के अधिक निकट है जहां कल्पना ही प्रकृति के उलझे स्वरूपों को सामने लाकर सुलझाती भी है। बाल मन को इसी से सुख भी मिलता है। दूसरे वे जो यथार्थ पर आधारित बाल साहित्य सृजन कर्म में रत हैं उनके अनुसार बाल हृदय को आसपास के वातावरण और परिवेश को समझने में मदद मिलती है। उनकी दृष्टि में कल्पना प्रधान, वायवीय भाव भूमि से सृजन की अपेक्षा यथार्थ परक नीति परक, उपदेश परक सृजन की सार्थकता और उपादेयता अधिक है। वर्तमान संदर्भ में विचार करें तो दोनों ही सृजन अपनी अपनी जगह प्रासंगिक और उपयोगी है। छत्तीसगढ़ी बाल रचनाओं में इस क्षेत्र की नैसर्गिक और प्राकृतिक सुषमा भी अपने संपूर्ण वैभव के साथ उपस्थित है। यहां के लोगों के अपराजेय संघर्ष के रेखांकन का यथार्थ प्रयास भी बाल मन के अनुरूप है। वनांचल क्षेत्र में रहवासी के बच्चे पशु पक्षी के साथ काफी निकटता महसूस करते हैं अतः रचनाओं में इनके प्रति बाल मन की संपृक्ति संपृक्तता भी स्पष्ट दिखाई देती है।

गांव की कहानी

बालचंद्र जैन

कई रहस्यों से भरा ग्राम सुंदरिका

ग्राम सुंदरिका के बारे में माना जाता है महाभारत काल में पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय निश्चित रूप से फुलझर -बोड़ासामर के संयुक्त क्षेत्रों में बिताया होगा और राक्षसों का संहार किए होंगे। पाण्डवों के छोटे भाई सहदेव ने भी राजसूय यज्ञ के संदर्भ में इन क्षेत्रों की विजय यात्रा की थी, और यहां के वन राज्यों को पराजित किया था। शिशुपाल पर्वत पर रानी सागर के समीप भीम के पैर का निशान देखने को मिलता है। कथानकों से प्रतीत होता है कि द्वापर युग के महाभारत काल में इन क्षेत्रों पर राक्षसों, दैत्यों का अधिकार था, जो उक्त कालीन ऋषि मुनियों को यज्ञादि करने से रोकते थे तथा उन्हें प्रताड़ित करते थे। उक्त काल अवधि में संभवतः त्रिसुंद नामक दैत्य का इन क्षेत्रों में आतंक था। त्रिसुंद के सुन्द और उप सुन्द दो पुत्र थे। सुन्द दैत्यों का प्रभाव इन क्षेत्रों पर था। जन सामान्य एवं ऋषि मुनियों के लिए यह क्षेत्र अत्यंत भयावह था, परिणामतः यह दानव सुन्द से प्रभावित क्षेत्र था। उक्त सुन्द दानवों के कारण ही यह क्षेत्र सुन्दरिका के नाम से जाना जाता था। आगे चल कर पाश्चात्य कालीन शासकों ने भी इन क्षेत्रों को सुंदरिका के नाम से जारी रखा। महाभारतकालीन चंद्रवंशीय राजाओं के अंतिम चरण के पश्चात इन क्षेत्र में राजनैतिक परिस्थिति मृत प्राय रही होगी। ईसा के 6 वीं सदी के उतरार्द्ध में राजनैतिक गतिविधियां पुनः सक्रिय हुई।

बिरहोर जनजाति को लेकर कई कथा सुनने को मिलते हैं जिसमें एक मिथक के अनुसार एक माता की दो बहनें थीं। एक बहन से बिरहोर उत्पन्न हुए तथा दूसरी बहन से उत्पन्न संतान महकूल कहलाए। एक बार बिरहोर और महकूल दोनों भाई जंगल में भैंस चराने गए। जंगल में जंगली लता से अपनी भैंसों को बांध कर वे जंगली लता काटने जंगल के अंदर चले गए।

बिरहोर जनजाति
की उत्पत्ति पर प्रचलित मिथक

जंगली लता काट कर लौटने पर उन्होंने देखा कि बिरहोर की भैंस रस्सी तोड़ कर अन्यत्र चली गई है, जबकि महकूल की भैंस वहीं बंधी मिली। तब बिरहोर ने अपने महकूल भाई से कहा कि तुम अपनी भैंस लेकर घर जाओ, मैं अपनी भैंस ढूंढने जा रहा हूं। ऐसा कहते हुए बिरहोर जंगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे जंगली लता दिखी, जिसे वह काटने में जुट गया तथा भैंस ढूंढने वाली बात वह भूल गया। कालान्तर में जंगली लता काटते काटते वह वीर नामक पहाड़ में रहने लगा। वीर पहाड़ में रहने एवं जंगली लता से लगातार रस्सी निर्माण करने के कारण लोग इन्हें बिरहोर कहने लगे। एक अन्य मिथक के अनुसार एक बार महादेव भगवान कुल्हाड़ी व बसुला पकड़ कर शिकार करने जंगल गए। शिकार करते करते वे चालीस जंगल पार कर गए और भूख प्यास से बेहाल उन्होंने फल खाकर भूख और नाले का पानी पीकर प्यास बुझाई। थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात उसका मन नाचने गाने को हुआ, तब एक पेड़ काट कर ढोलक बनाया तथा उस पर चमड़ा चढ़ाने के लिए शिकार की खोज करने लगे, तभी उनकी नजर पेड़ पर बैठे एक बंदर पर पड़ी, जिसका शिकार कर उसके चमड़े को ढोलक पर लगाकर बजाने और नाचने लगा। बाद में पास के बिरहोर लोगों को बुला कर मरे बंदर का मांस खाने को कहा, उस दिन से बिरहोर बंदर पकड़वा कहलाने लगे।

जनजाति विशेष : डा महेश श्रीवास्तव

धार्मिक : रोशन कुमार

रामायणकालीन धरोहर का साक्षी सारासोर

सूरजपुर जिला मुख्यालय से लगभग 50 किलोमीटर दूर सारासोर नामक स्थान है। राम के वनवास काल से जुड़ी किंवदंतियों में सारासोर और सीताकुंड की कहानी मिलती है। वनगमन के दौरान महरमंडा आश्रम के बाद श्रीराम सारासोर पहुंचे। वहां राक्षसों के आतंक की बात सुनकर श्रीराम ने अंचल को आतंक मुक्त करने की प्रतिज्ञा ली और राक्षसों को चुनौती देते हुए धनुष का टंकार किया। धनुष के टंकार से खरात, बड़का पहाड़, पिलखा और वेदमी पहाड़ी के रूप में दो हिस्सों में बंट गया। इस प्राकृतिक परिवर्तन का आज भी प्रत्यक्ष दर्शन लाभ लिया जा सकता है। पहाड़ियों के बंटने से वहां जो गड्ढा हुआ उसे आज भी सीता कुंड के नाम से जानते हैं। यह सीता कुंड सीता नहानी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां श्रीराम की स्मृति में राम जानकी मंदिर का निर्माण कालांतर में किया गया है। इसी तरह बड़का पहाड़ी के पास एक गुफा है, जिसे जोगी गुफा के नाम से जाना जाता है। यहां से श्रीराम, रेणु नदी से होते हुए रामगढ़ के समीप उदयपुर क्षेत्र में प्रवेश किया।

सुरता

रोशन कुमार

अपने उद्देश्य को पूरा करने में लगे रहते थे विष्णु शरण वैष्णव

छत्तीसगढ़ के सरायपाली क्षेत्र में विष्णुशरण दास का जन्म 19 सितंबर 1919 को ग्राम पझरापाली के एक वैष्णव परिवार में हुआ था। वे एक महान साहित्यकार एवं विचारक थे। वे हिंदी, छत्तीसगढ़ी, और उड़िया भाषा के अच्छे जानकार थे। आपकी लेखनी से पूरे छत्तीसगढ़ में अलग पहचान बनी। आपकी वाणी में विशेष आकर्षण रहता था। वे हमेशा प्रसन्नचित मुद्रा में रहते थे। गहन और गम्भीर विषयों को सरल और रुचिकर ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता उनमें थी। आपने संत विनोबा भावे के भूमिदान आंदोलन में सक्रिय सहयोग किया था, जिसमें उन्हें आशातीत सफलता भी मिली थी। इसी तरह वे लोगों की समस्याओं का कुशलतापूर्वक समाधान भी करते थे आपके सरल स्वभाव के कारण आपकी कुटिया में लोगों की भीड़ लगी रहती थी। आपकी साहित्यिक अभिरुचि बहुत ज्यादा थी। अपने निवास में कवि गोष्ठी का आयोजन भी करते थे। उनकी कविताओं में गूढ़ अर्थों की सरल अभिव्यक्ति रहती थी। आपकी यह उपलब्धि रही कि तत्कालीन रायपुर जिले का भूगोल भी लिखा था, जो पाठ्य पुस्तक के रूप में उन दिनों चलता था। आपकी साहित्यिक रचनाओं में पंचवंशिका, प्राणाधिके, यमुना तीरे, यूगे युगे, ज्ञान गंगा आदि रही। इसी तरह कई लेखनी का उनका प्रकाशन नहीं हो पाया। अपने जीवन के अंतिम समय समाज सेवा के साथ लेखनी को बरकरार रखे। कई नव लेखकों को प्रोत्साहन भी करते रहे, जिनका आज साहित्य के क्षेत्र में अच्छा नाम है। आज भी इस अंचल में इस लेखक का नाम लोग श्रद्धा से लेते हैं। आपका निधन सात नवंबर 1988 को हुआ।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

लोक गायन

अजय कुमार चतुर्वेदी

सरगुजा अंचल के लोकगीतों की विशिष्टता

सरगुजा अंचल के लोकगीतों में सामाजिक संदर्भ को देखें तो निश्चित रूप से यहां के लोकगीतों से समाज को एक नई दिशा मिलती है। सरगुजिहा लोकगीतों में काफी मिठास होती है। लोकगीतों में समाज सुधार, सामाजिक बुराइयों को दूर करने , नशा विरोधी गीत, विभिन्न संस्कारों के गीत और बारह मासी गीत सुनने को मिलते हैं। इसके अलावा लोकगीतों में खेती करने की प्रेरणा, विकास और प्रेम प्रसंग के गीत, वर्षा गीत जैसे अनेक स्थानीय संदर्भ समाहित होते हैं।

यहां विभिन्न अवसरों, मौसमों और त्योहारों में अलग अलग लोकगीतों का गायन किया जाता है, जो शैला, करमा, डमकच , सुआ, उधुवा(प्रेम प्रसंग) सोदो,, संस्कार गीत, देवारी गीत, जवारा गीत, ददरिया, फाग गीत, बान बहुली और लोकड़ी गीत होते हैं। लोकगीत जो सत्य की ओर इंगित करता है देखें -

माघ पूर्णिमा मेहेन, सत नदी आए।
सत सत बोले बर, सत नदी आए।
सत नदी आए हो...सत नदी आए।

सरगुजिहा लोक गीतों में इस तरह जन चेतना की भी गीत हमें देखने मिल जाते हैं। यह देखें नशा विरोधी पर गाए जाने वाले चर्चित गीत -

गांजा पीले माजे लागे, माखुर खाके थूंके।
भट्टी ले दारू पीके, कुकुर निगर भूंके।
कुकुर निगर भूंके हो, कुकुर निगर भूंके।